Date

प्रश्न:- "मीरा के काव्य में विरहिणी नारी की पीड़ा साकार हो उठी है।" इस कथन के आलोक में मीरा की विरह भावना पर विचार कीजिए।

उत्तर:- कृष्णभक्ति शाखा की हिन्दी की महान कवयित्री मीराबाई का जन्म 1504-10 के आस पास कुड़की गाँव में हुआ था। इनका विवाह उदयपुर के महाराणा कुमार भोजराज के साथ हुआ था। ये बचपन से ही कृष्ण भक्ति में रुचि लेने लगी थीं। विवाह के थोड़े ही दिन बाद उनके पति का स्वर्गवास हो गया था। पति के स्वर्गवास के बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्ण भक्तों के सामने श्री कृष्ण जी के मूर्ति के आगे नाचते रहती थी।

मीरा ने जीवन भर भारतीय नारी की पीड़ा झेली थी। पति के निधन के बाद उनके देवर राणा विक्रमजीत, राजकुल के सदस्यों ने, पुरुष सत्तात्मक सामंती समाज ने उनके स्वच्छंद स्वभाव को असह्य एवं मर्यादाविहीन मानकर उनको अनेक यातनाएँ दीं। नारी जीवन की समस्त विडम्बनाओं और यातनाओं को सहनेवाली, उनसे संघर्ष करनेवाली मीरा के भावलोक में नारी की समस्त पीड़ा और वेदना साकार हो उठी है। भक्तिकाल के अन्य कवियों के विरह वर्णन से अनेक बातों में भिन्न है। जहाँ अन्य भक्त पुरुष थे और नारी की वेदना का केवल अनुमान लगा सकते थे। वहाँ मीरा नारी थीं और उन्होंने यातनाओं को स्वयं भोगा था। अधिकांश भक्त कवियों की दृष्टि में नारी नरक की खान, माया, डाकिनी, सर्पिनी थी। रीतिकाल के कवि तो उसे भोग्या, रमणी एवं दासी ही समझते थे। उनका अधिकांश विरह काव्य परिपाटी काव्य परंपरा का

पालन मात्र है।
मीरा का प्रियतम निर्गुण, निराकार, अगम्य, परात्पर ब्रह्म न होकर उनके अवतार भगवान श्री कृष्ण हैं जो गोपिका वल्लभ हैं प्रेम की मूर्ति है सौंदर्य के अपार भंडार हैं उनका लौकिक स्वरूप परम रमणीय एवं मनमोहक है। अपनी लीलाओं से वह सारे ब्रजमण्डल को मन मोहते रहते हैं। मीरा योग साधिका नहीं है वह कृष्ण के अवतारी स्वरूप की उनकी मानसी मूर्ति की अराधना करनेवाली एकनिष्ठ पूर्णतः समर्पित भक्त हैं। पति के आकस्मिक निधन से उनकी दशा अत्यंत दयनीय हो उठी है, अपनी वैधव्य की पीड़ा और राज परिवार के क्रूर व्यवहार को भुलाने के लिए उन्होंने श्री कृष्ण की मनमोहक मूर्ति को अपने नैनों तथा हृदय में बसा लिया था। और जो उनकी कल्पना में या स्वप्नों में मिलन का सुख पहुंचाता था, वह धरती पर उनके लिए अलभ्य था, अप्राप्य था, चाहे आज के फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिक इसे मीरा की काम-कुंठा या अतृप्त वासना का प्रतिफल कहें और चाहे यह उनकी कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण तथा अनवरत ध्यान करने का परिणाम हो। वह स्वप्न में कृष्ण से मिलने का सुख पाती थी -

"स्याम पधारत सेज में सूनी सैन जगाई हो
तुम हो पूरे साइयाँ पूजा सुख दीजे हो
मीरा व्याकुल बिरहिणी, अपनी कर लीजो हो।"

बिरह वेदना मीरा के भाव लोक की मूल भूमि है। उनका प्रियतम लौकिक जगत में प्राप्त नहीं हो सकता अतः उनके प्रेम की परिणति विरह में होती है। उनकी यह प्रणयानुभूति जितनी आध्यात्मिक है उतनी ही लौकिक भी। उनकी समानता या तो जायसी की नागमती की पीड़ा

Date

से या फिर सूरदास की गोपियों की विरह-पीड़ा से की जा सकती है। प्रणयानुभूति का यह लौकिक, सामाजिक, चिरपरिचित रूप ही उनके विरह को गहराई और विश्वसनीयता प्रदान करता है। उनके विरह में स्वानुभूति का यह उत्कट रंग है जिसे परम्परागत विरह-वर्णन के शास्त्रीय रूप-स्वरूप या कामदशाओं में बांध कर नहीं देखा जा सकता। मीरा कहती है —

"विरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावे।"

मीरा का शरीर विरह की ज्वाला से जल रहा है, वह बौरा गयी है, वह प्रिय की प्रतीक्षा करते-करते, पंथ निहारते-निहारते थक गयी है उनका शरीर श्रीविहीन हो गया है, केश पांडुर हो गए हैं। ~~आंसू~~

मीरा को वर्षा ऋतु में बादलों को देखकर लगता है कि उनका प्रिय भी आएगा। वह महल के ऊपर चढ़कर प्रतीक्षा करती है, पर प्रिय नहीं आता और प्रकृति का उद्दीपक रूप उन्हें विरह के अथाह सागर में डुबा देता है। उन्हें लगता है मेघ और दामिनी मिल रहे हैं, इन्द्र के मिलने धरती ने शृंगार किया है। वह विषमता उनकी पीड़ा को और भी तीव्र कर देती है —

"उमग्यो इन्द्र चहू दिसि बरसै
दामिनि छोड़ी लाज
धरती रूप नवा नवा धरिया
इन्द्र मिलन के काज
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
बेगि मिलो महाराज।"

तीज-त्यौहार, उत्सव पर्व आते हैं, पर प्रिय की अनुपस्थिति में वह अन्यों को उल्लसित रंग में डूबा देख तीव्र कष्ट अनुभव करती है —

Date

"होली पिया बिनु लागै खारी
सुनो री सखी मोरी प्यारी
सूनो गाँव देस सब सूनो
सूनी सेज अटारी
सूनी बिरहिन पिव बिन डोलै
तजि दइ पीव पियारी
भई हूँ या दुखकारी।"

लोक विश्वास और परम्परा के अनुरूप मीरा भी प्रिय को संदेश भेजती है, कौए को उड़ाती है कि —

"प्रीतम कूं पतियाँ लिखूं, कउवा तू ले जाइ
जाइ प्रतिम सूं यों कहै रे थारी बिरहिन धान न खाइ
वेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम बिन रह्यो न जाइ।"

वियोग की पीड़ा में दिवानगी इस हद तक बढ़ गयी है कि वह ढिंढोरा पीटकर अपने प्रेम दिवानी होने की बात सबको सुनाना चाहती है। कोई लाज, कोई शर्म, कोई संकोच नहीं। यह स्थिति प्रेम की पीर की अतिशयता का ही द्योतक है।

सारतः कहा जा सकता है कि मीरा के भावलोक में विरह वेदना के पीछे नारी की मर्मभेदी पीड़ा है जिसके लिए समाज कम उत्तरदायी नहीं है। साथ ही उनमें अपने आराध्य देवता के प्रति गहरी आस्था, निश्छल आवेग, अपरिमित प्रेम है। उनका काव्य प्रिय वियोगजन्य पीड़ा की सघन, मार्मिक अनुभूतियों की बड़ी सशक्त, विश्वसनीय एवं वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति है।